

घ्रययः उद्देष्ट्रें द्रायः क्षेत्रः दुः घणः यठदः द्रयाः । द्रणे श्वदः श्वेणः यद्ययः यद्देशः यद्देषः यद्देषः स्थाः । द्रणः श्वदः यद्देषः यद्दे

After you have firmly decided that everything is emptiness. If you develop a conduct in which you abandon virtue and do not avoid evil deeds,

That will be the view of the mara of bad action run wild.

Keep yourself from falling under the control of the view of that sort of mara!

These are the introductions of Great

Completion.

> રે'ฒ'' चुैर' क्'र्न्ट् 'सॅ' 'प्रैर' 'झ्रर' तु। | से'प्रमाप: क्वार्यः मार्थेयः य'प्रेन्यः 'चुैक्' क्वां । से'प्रमाप: मुक्तां चुक्त 'चेनाक' सम्राक्षेत्रा । ते' 'झ्रम' या सक्षां के' 'चेश्वर' प्रमाप: प

> Therefore, first you should proceed like this:
> Sometimes look while supplicating the guru and sometimes look carefully while relaxing and tightening.
> When you look in that way, your mind will be glad and Everything will be shining forth while obviously empty.

म्दान्तवासुर्भितासूदायिष्णुवास्ववाद्या ।
वानायवादेनाणुदाविकासुर्वे केदासूवादिकासूच्यादिकास्यादिकासूच्यादिकास्यादिका

Do not spoil it with grasping; relax into a state without grasping.

Even if you do not practice after having received the introduction,

At the time of death no matter which fears arise in the bardo,

You will know that everything is own appearance, the own forms
of emptiness, and you will become buddha in the alpha purity ground.

दें र्बेट्-अन्वेतस्र १४ स्वर्भः सुन्येत्र प्रदेश स्वर्भः स्वरंभः स्वर

To practice without having received the introduction, will be like the example of someone who is mistaken on the first day of the month.

Being still being mistaken on the fifteenth day of the month.

When you have not realized that all fictional phenomena are truthless. What a huge lie it is to say, "I have realized emptiness."

देश कार्टे र्श्वेन प्रदेश प्रति प्रश्ना श्लिय स्वाप्त स्वापत स्व

### **EMAHO**

Now, once more fortunate sons of the family, listen!

When you have taken in that actuality of the view,

Sever all ties of attachment and aversion to people and homeland.

Alone in forest tracks and mountain valleys,

Give up endeavours of the body and let it be natural;

प्यामिश श्चामिर्दे के द्रायमिर्दे क

पर्क्षेश्वर् सेर्प्यते प्रत्यामुक्ष्य स्य स्थिय विद्यास्य सेर्प्य स्थित स्थान स्थित स्थान स्थान

र्त्तु चित्रक्ष चुरु के द्वारा प्रतिकारी स्थान के स्थान

You cannot see the fact beyond rational mind using the stuff of rational mind and You cannot reach the activity-less place with the stuff of activity, So, if you want to attain the beyond rational mind, activity-less fact, Instead of engaging in the spoilage of contrivance, set yourself in naked rigpa.

ग्राच्या प्राचित ग्राज्य प्राचित प्रा

वहुबायबाक्षी अर्थेट 'हु' वरि 'प्रकेषिय पर्से र्लिंग । पर्से अबायबाक्षी हैं द 'द्र्य पर्दे के 'द्र्य ग्रामा गृह दें दें । ।

श्रिंद 'प्य को 'प्रमुच श्रु अस 'प्रहें द या प्रिंद या । पर्द या प्रकाय को हैं द 'प्रस्ते या प्रदे या । ।

It is not seen by looking at a view, so put aside all searching for the view!

It is not discovered by meditation, so cast away the referenced foci of thinking with grasping.

It is not accomplished by conduct, so let go of grasping at illusions. It is not gained by seeking it, so leave aside hopes of a fruition.

५.७५८.चेश्वःत्राच्च्यंश्वे५.७१ विश्वास्त्रश्वाच्या विश्वास्त्रश्वः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स ५.७५८.चेश्वः स्वाधः दश्चेषाश्चः स्वाधः स

The awareness of the present is un-manufactured and hanging loose, so do not engage in biasses, do not spoil it with grasping!

This right of non thing which is luminous.

This rigpa of non-thing which is luminous— Just this is the pinnacle of all views,

This freedom from rational mind smeared all over with referenced foci— Just this is the pinnacle of all meditation. अप्तर्रेअप्वहेंद्रायेन् भ्रुनायम् प्रविषायप्ति। पिनियार्थ्विन्यगुद्राण्चे प्रविद्याः। अप्तर्ययायेद्रव्यक्षियां मुन्ययप्ति। पिनियाप्त्रव्ययप्तुगुद्राण्चे प्रविद्याः। This placement in uncontrived grasping-less looseness— Just this is the pinnacle of all conduct. This unsought primordially spontaneously-existing situation--Just this is the pinnacle of all fruition.

षु प्रति श्रेट में श्रेट माश्रव पहिंदा शेट हिंशा । श्लेश प्रति श्लेट में प्रति श्लेट माश्लेप । श्लेट प्रति श्लेट में प्रति श

सुः भवतः न्याः कर्त्वाः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्याः कर्त्वाः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः ना निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः निर्दान्य कर्तिः नियाः सं अर्केन । ना नतः निर्दान्य कर्तिः निर्वान्य कर्तिः निर्वान्य

If you are free of bounding extremes, that is the supreme king of views. If you are free of vacilatory foci, that is the supreme king of meditation. If you are free of accepting and rejecting, that is the supreme king of conduct. If you are free of hope and fear, that is the supreme king of fruition.

> मा=तःमाहतःसेन्'ग्रैसःदेशासेन्'ग्रैसःदेशासेन्'ग्रैसःन्मामःस्चुनःसःसेन्'ग्रैसःदेशास्यासेन्'रेशास्यासेन्'रेशास्य मा=तःमाहत्सेन्'ग्रैसःसेन्'ग्रैसःसेन्।

By letting what it is be, do not engage in grasping on its account. By being without "This is it", do not engage in suppression and furtherance. By being without vacilatory foci, do not engage in biasses. मार्ने न त्रमान्यते प्रतास्मान्यते प्रतासम्बद्धाः स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान

In primal purity's self-knowing self-illumination, because it is beyond rational mind's objects of thought, there is nothing to view; because its entity is free of a ground, there is nothing to meditate on; because it is self-liberation beyond extremes, there is no conduct to be done; because it is beyond the clinging that goes with conceived endeavours' accomplishment, there is no fruition.

र्दे में ब्रेट है द प्रेंच से दा विद्या से प्रेंच से दा विद्या से प्रेंच से दा से द

क्यापर्चेर नेया या क्या या पि प्राप्त या प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्र प्र

As with a bird's trace which is nothing because of not happening afterwards, do not go out to greet thinking and thought afterwards!

As with a bird's trace which in the present has no colour and shape, the thinking and thought of the present in the end goes its own way.

So do not create the spoilage of contrivance by using an antidote directed at "it".

हे 'क्रु-स्न-'या 'दे 'क्रु-' अ'पि देव 'सेव 'स्वर-'सुना 'क्रेड 'सेव 'प्यस-'पि 'प्यस-'पि 'प्यस-'पि 'प्यस-'पे 'क्रु-' स्वर-'या 'पि 'प्रस-'या प्रिन सेट स्वर-'या 'प्रिन सेट स्वर-'या 'प्रिन सेट स्वर-'या 'प्रिन सेट स्वर-'या 'प्रस-'या प्रस-'या 'प्रस-'या प्रस-'या प्रस-'य

क्षुं भेद् 'प्रथम प्रयाण में प्राप्त प्रश्ने । विका प्रका प्रयाण में प्रयाण मा ।

रा प्रप्राप्त प्रमुद्द 'क्ष्मा स्राप्त प्रमुं भेद 'प्राप्त मा मा ।

It is a birthless beyond-thought primordially-liberated view, so if you work hard at it, there will be no view of it.

It is a relaxation-into-being-left-to-be-itself naturally-occurring meditation, so if you work hard at it, there will be no meditation on it.

तुस्रम्सुस्र-इन्यायि सेस्स्रिक्ष्य । सिन्ध्र्मिस्सर्वे सुस्र-वर्ष्क्षेत्र स्ति । र्थिन् स्ति स्वायायि स्ति । विश्वायायि स्ति । This mindness, being free of root of the three times, unmeditated, directly appears-what a happy event! Phenomena from beginning to end are by nature pure. Primordially liberated, wholly liberated, with all conceived effort-endeavours collapsed—how wondrous!

घरमञ्जेष प्रस्ति । क्विया परि प्रमेदिक परि प्रस्ति । क्विया परि प्रमेदिक परि प्रस्ति । क्विया परि प्रमेदिक परि प्रस्ति । क्विया परि प्रस्ति । क्विय परि प्रस्ति । क्विया परस्ति । क्विया परि प्रस्ति । क्विय परि प्रस्ति । क्व

अप्रवासम्भारत्मुत् प्रास्त्र के स्वित् प्राप्त कि स्वास्त्र के स्वर्ध स्वास्त्र के स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

ग्रम्भायान्यम्भायः र्हेप्याभेदः र्ह्वेप्याभेदः र्देश्याभेदः पर्दे प्रायदे प्र

विष्णत्र्येत्रत्र्यस्य प्रमान्यस्य । श्रिम्प्येत्रेयः प्रमुक्षः स्यान्यस्य । विष्णियः प्रमुक्षः स्थान्यस्य । विष्णियः प्रमुक्षः स्थाः स्थाः स्थाः । विष्णियः स्थाः स्

On the basis of the innate character which is rigpa without coming and going, you relax into letting it do what it wants. Then, having given it the freedom to do as it pleases, it will stay put, unmoving, steady as a mountain.

Sons, understand its perverse ways!

The point to be most highly treasured is that, for this, there is no reference to even a speck of meditation to be done. Nevertheless, it must be kept in place, without distraction, by mindfulness.

# क्षेत्रार्क्षे न्यादाक्ष्मवास्वास्वरम् क्ष्मास्वर्त्ताक्ष्मविष्या । भार्क्षेत्रास्वर्त्तास्वरम् स्वर्त्तास्वर्त्तास्वर्त्ताक्ष्मे । विष्युव्यास्वेन् स्वर्तास्वर्ताः स्वर्तास्वर्ता विष्युत्तास्वरत्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वरत्तास्वरत्तास्वरत्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वरत्तास्वरत्तास्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वर्त्रस्वर्तास्वर्तास्वर्तास्वरत्तास्वर्तास्वरत्तत्तास्वरत्तास्वरत्तास्वरत्तास्वरत्तत्तास्वरत्तास्वरत्तास्वरत्तास

### **EMAHO**

Now, listen here once more, fortunate sons!

This own-form of appearance-emptiness without external object, because it is primordially empty, comparable to a moon in water, does not need to be cleansed. The internal thoughts of the thinking process vanish of themselves, without trace.

So it is not necessary to apply the antidotes of effort-filled endeavours to them.

ब्रैट बेबब के चुंबर के स्वर के हैं का बेद स्वर के स्व

The appearing mind, which is primordially-liberated hanging-loose wisdom, does not need the superimposition of any abandonment- adoption, hope and fear, at all. For this directly seen, naked, rigpa, do not dress it in the clothes of mental analysis's elaborations but relax yourself into its being just as it is, just what it is, evanescent, and traceless, in bias-less great equality.

देशीः त्रायाः प्रवासका देशका स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त

In that state, whichever ideas of the thought process shine forth, know all of them to be bias-less self-arising rigpa's own offput.

And then, instead of following after them, if you let the jingling and jangling, blaring on and off, elusive comings and goings of appearing mind, be a vast sameness of the dharmata's shifting events.

You will have arrived at Samantabhadra's mind-space.

अञ्चरमान्त्रित्रः र्हेन् सेंट्यान्यः न्या विद्यास्य प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्राप

सम्मद्राक्ष्यः श्री मुत्राय्येते प्रमातः देवः श्री मानु प्रमातः सम्मद्रात्ते सम्मद्रात्ते सम्मद्रात्ते सम्मद्र क्ष्मायः द्वमा प्रमातः सम्मद्रात्ते सम्मद्रात्ते सम्मद्रात्ते सम्मद्रम् सम्मद्रम्

Through the kindness of the old father, Chokyi Gyalpo, I, Tshogdrug Rangrol, the man whose sixfold group is self-liberated, have arrived at the mind of activity-free spontaneous existence.

There is this key point, though some do not understand it.

Everything is already primordially done but they say "I will do it!"

ભેર્જોના કે પ્રત્વા કે ખાર પ્રત્યા મે ખાર પ્રત્યા મે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્ય કે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્ય કે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્યા કે ખાર પ્રત્ય કે ખા

थे'यर्गेन्'हेन्'तुत्तुन्'हे'यर'यर्गेन्'न्। विराध्याधित्'न्येंन्'हेन्'न्यर'रे'यत्'श्रेशा । र्घ्यत्'ण्यर'क्यांनेंन्यर'क्यांनेंन्य्यर'क्यांनें । हिन्यश्चारायेंक्य्यांन्यंनें स्वाध्याप्तायेंक्यांनेंन्य्या न्युन्'ण्यर'नहिन्यसुन्यण्यर्थेक्यांनेंन्यर्थे। ।

Everything is already primordially traversed but they say "I will traverse it!"

Speaking like that, they are people who put their hopes in a mental analysis type of view. They have learning, but being theoretical, dead words only, it is discursive thought; they have realization, but being a result of can-do meditation, it is a product of rational mind; they have analysis but being a dualistic accomplishment, it is samsaric.

### र्क्य क्षेत्र खेत्र प्रीत् आवत च्चै क्षेत्र त्या | हिंगाय केत्र क्षेत्र चेना प्रयापय प्रीया केत्र प्रस्ते प्रा चु चुेत्र क्षेत्र प्रयापय चित्र प्रयापय चित्र प्रयापय चित्र प्रयापय चित्र प्राप्त प्रयापय चित्र प्रयापय चित्र

These people who approach dharmata through mental analysis certainly have no karmic connection to Quintessence Great Completion. Engaging in activity is not necessary; doing so does not achieve it.

त्तैः स्रमः मेनाया बदाया स्राया स्रा

Rigpa is present with transparency; that's how it is.

The person who has that explained but does not listen,
has no karmic connection to Great Completion, how ridiculous!

Wherever you look, since it is the mind of alpha purity great space
shining forth, samsara and nirvana are without duality.

Having put the mind of that sort into song,
the conquerors of the three times will be pleased, no doubt!
If you ask, "but, having given confusion's externally appearing objects
the freedom to go to their own place, won't one return to being confused again?"
An ordinary person grasps at a self in them and so is confused,
a yogin, knowing them to be groundless, root-free, does not treat
them with contrivance-spoiled adoption and rejection but
leaves them to be themselves, without grasping, and so is unconfused.

तदै'त्य'र्मित्य खे'र्थेद्'यहेंद्'श्चर'क्षा तिदै'त्य'र्मित्य खेंद्र'ख'सहैम्'श्चर'क्षेद्रा ।

र्मित्य खेंद्र'ठेट'कम्बर्'द्र'र्थेद्र्य'येद्र्य । विद्र'त्य'र्वेद्र्य'येद्र्य'येद्र्य'येद्र्य ।

र्मित्य खर्रेट्र्यं हिन्दुं हिन्दुं हिन्दुं हिन्दुं विवादित्या ।

If you then ask, "Is there a point in this where one could deviate?"

The answer is no, there is not a single point of deviation nor mistake in it.

Points of deviation happen when there is clinging and attachment;

If there is no grasping at what shines forth,

where could there be a point of deviation to fall into?

र्देन'णुट'र्देन'य'ख्यायायकर'रुबाखा ।नाट'न्य-इब्रायर'र्हेन'यदि'र्दे'व्या । क्ष'य'रे हैर'यर्क्केब'रु'यर्रेर'यम्बेबा ।रे'ष्णे'रुबाणे देन'याबावे'या । हेब्र'यदे'क'रे खुवावे र्क्केट'यर्वे ।

Still, there is the point that, at the time when rigpa shines forth as an object, the meditation of viewing the entity of the discursive thinking is not what is proclaimed; what is to be preserved is the rigpa of that time's factor of being naked and clearly present.

Furthermore, when rigpa is not emitting-withdrawing, when it is abiding, it is not the no-thought abiding factor
Itself that is the actual meditation—At that time, the factor which is the strength of the luminous pure part which at that time is vividly present and clear is what is to be preserved.

ग्वर् पर्ने अर्गे प्रकर ग्वर्य गृष्ठ गाया । यक्ष य रे है र क्षेय य पर्ने प्रविद्या । क्ष्य व प्रविद्या प्रविद्या व प्रकर य रे क्षेट गो सा । ग्वर्य य र् य के प्रव्या के प्रविद्या । प्रविद्या व प्रवि

अर्देर ज्यार यो दुर्श सुप्र रिया यपि का हिन या बरा श्रवा मेश यो रिप्र प्राप्त हो ।

ग्रिंट दुः सा युर प्राप्त रे सुंग्रेर से । युर प्राप्त दे स्था दि प्राप्त प्राप्त प्राप्त से दे यो प्राप्त प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्राप्त से दे यो प्त

खेनाबार्केन् भ्रुप्ति नावन् त्याना सेना या ही | हेव त्या सुन् त्वबाबायेन र्भ्रुप्त या । वेस्याया नावन्त्र त्या नावन्त्य त्या नावन्त्र त्या नावन्त्य नावन्त्र त्या नावन्त्र त्या नावन्त्र त्या नावन्त्र त्या नावन्त्य त्या नावन्त्र त्या नावन्त्य त्या नावन्त्य त्या नावन्त्य त्या नावन्त्य त्या नावन्त्र त्या नावन्त्य त्या नावन्य त्या नावन्य त्या नावन्य त्या

The main issue of Thorough Cut's view stated as "rigpa is to be stripped naked then have its clear presence preserved", is the particular key point that is of the greatest importance—

It is the central issue of a hundred statements about the subject because of which you fortunate heart sons must know it.

# हैं खेरअर्दे। द्रायदासेश्वराष्ट्री सुरह्मश्रयामुश्चरम्बर्छेत्। विद्रायासेद्रायदि विनाक्रेत्रमित्र स्वापा है प्यार्वे स्वाप्ते द्रायदि विनाक्रेत्र दी। द्राप्ति सेश्वरायास यो पदि नायीत्। । नायवायासी विद्राप्त सेश्वरायस विना सेशा होना सेशा है स्वाप्त सेशा होना सेशा है स्वाप्त सेशा है स्वाप्त सेशा है

+ + + +

#### **EMAHO**

Now, once more fortunate sons listen with respect!

The four great spotlights that unmistakenly illuminate are as follows.

The great spotlight of view without mistake is exactly this awareness of the present clearly present; Because it illuminates this un-mistakenly it is called "a spotlight".

क्षेंब्रायार्वेरायाये विषा केवावी । प्राप्ति विषायायायाये प्रितायायाये विषा केवावी । प्राप्ति विषायायायाये विषाये विषा केवावी । प्राप्ति विषायायायाये विषयायायाये विषयायाये विषयायाये विषयायाये विषयाये विषये व

The great spotlight of meditation without mistake is exactly this awareness of the present clearly present; because it illuminates this un-mistakenly it is called "a spotlight".

The great spotlight of conduct without mistake is exactly this awareness of the present clearly present;

Because it illuminates this un-mistakenly it is called "a spotlight".

त्य्वयः युःर्वे र स्याये प्रिया क्रेक् की | ५ १ द्वरि स्वेयः यात्रा यो पदी या यात्रा यात्रा

The great spotlight of fruition without mistake is exactly this awareness of the present clearly present; because it illuminates this un-mistakenly it is called "a spotlight".

भै'त्युर्र्यायोग्योवेराकेत्यित्वित्यम्भत्या । स्थायात्युर्यायभेत्यते मावेराकेत्यते। । ५ द्वित्येनेषायायायोप्यतीमायोत्या । द्वियामासुभायम्भत्यतीम्भेरात्यावेराकेषात्या।

The four great nails that make an unchanging situation are as follows: The great nail of changeless view is exactly this awareness of the present clearly present;

Because it is steady through the three times, it is called "a nail".

र्भ्रियःयःत्युरःयःसेन्ःयतैःग्वेरःकेन्द्री ।नःक्षतैःभेषःयःषःयोःतनैःगःधेन्।। नुषःगशुसःयहनःयतैःस्वैरःनःगवेरःलेषःगु।।

The great nail of changeless meditation is exactly this awareness of the present clearly present; because it is steady through the three times, it is called "a nail".

र्श्वेन्यत्युर्यस्येन्यतेःम्बेर्यकेन्द्री । प्रः द्वतःमेश्वयः स्वायेः पर्नेः माध्येना । पुरुषः मासुस्य सम्बन्धः स्वीतः स्वीतः स्वायः स्वायः प्रस्तिः माध्येना ।

The great nail of changeless conduct is exactly this awareness of the present clearly present; because it is steady through the three times, it is called "a nail".

त्य्यात्रात्यमुरायात्रेत्रायते म्बोराकेत्रती । प्राप्ते स्वेशासायात्रात्यते प्राप्ते । प्राप्ते स्वाप्ते स्वेशासायात्रात्रीयात्रीया ।

The great nail of changeless fruition is exactly this awareness of the present clearly present; because it is steady through the three times, it is called "a nail".

क्ष्यास्य सम्बद्धाः स्वतः स स्वतः स

There are a vast number of differing views,
But in the self-knowing rigpa self-arising wisdom of the present
There is no duality of view and viewer.

### ष्ट्र'च'अ'चष्ट्र'ष्ट्र'चति'अषिद्र'चेंकिया । व्ह्र'चति'आषद्र'चेंच्चक्य'चर्याक्रा हेन्द्रा । देति'कें'ब्ह्र'च'चन्'अर'त्र्ष्ट्रिय'च'थेद्रा ।

Do not look at the view but seek the viewing agent. If the viewing agent having been sought is not found, At that time, the view is reaching the exhaustion point.

does not go into the primordial absence of a cut-off emptiness, a blankness—
This awareness of the present, uncontrived and clearly present,
is Great Completion's view exactly.

र्श्वेस्य स्वाप्त स्

uncontrived and self-luminous, is the meditation.

र्श्वेन्यभैभष्ठतमुक्ते मुद्दम्यद्या । । ह्यन्यन्यस्य प्रमाणि स्वाप्ता । ह्यन्यन्यस्य स्वाप्ता स्वाप्

र्बुद्रिन्यः श्वुद्रः सुः रहेष्यद्रः स्रोद्राया । यात्राक्ष्यायाः स्त्रीत् स्वद्रायः स्वाद्यायाः । वर्षे स्वयः स्वाद्यायः स्वयः स्वाद्यायः स्वयः स्वाद्यायः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः

This conduct in which there is no conduct at all to be done does not fall under the control of latencies' confusion—
In the awareness of the present, uncontrived and self-luminous, not engaging at all in contrivance-spoiled adopting and rejecting exactly is the conduct of complete purity.

There are a vast number of differing fruitions, but in the self-knowing three kayas conceived endeavour-less spontaneous existence,

there is no duality of accomplishment and accomplisher.

Do not engage in accomplishment of a fruition but seek the agent of the accomplishing.

Having been sought, if the agent of accomplishing the fruition is not found, At that time, fruition is reaching the exhaustion point.

This fruition in which there is no accomplishment at all to be made Does not fall under the control of adoption-rejection, hope and fear—The awareness of the present, self-luminous spontaneous existence, the manifest three kaya self-illuminating emptiness is itself the fruition of primordial buddhahood.

+ + + +

### **EMAHO**

Now, once more sons of the family listen well!

If like that, first you have preserved being without distraction, then later, even if you allow everything without inhibition, based on the factual state it all will be left normal but there will be no coming and going.

श्रूट प्राम् हैश्या पुरेश से प्राप्त है से

स्रेसस्य द्रान्तस्य सायद्र या है स्यापा प्रवास्त स्था । द्रिये के के स्याप्त स्याप्त

ह श्रें अर्फ़्त्रे प्रतुष्ट देनाकर के स्वाप्त क्षेत्र प्रति क्षेत्र के स्वाप्त क्षेत्र प्रति के स्वाप्त क्षेत्र प्रति के स्वाप्त के

### FMAHO

Still, sons of the family, please listen to me!

View this material body as a moon in water!

Let your verbal expressions of speech be as echoes!

Allow mind's mass of thoughts to be cleared out in their own place!

ब्रूट म्मान्य कें स्वयं व्यवं व्यवं व्यवं व्यवं व्यवं क्षेत्र क्षेत्र

द्व'यबस'यर्डेब'यक्षुद्र'स'युद्र'र्द्रा प्रद्राय्य द्वा । स्टर्स्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय्य स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स

Stay in a state without the spoilage of contrivance of the thought process, where everything is left to be itself; There self complexion self-liberated without grasping is luminous and empty---

Stay in truthless, meditation-less, conceived endeavour-less, tracelessness.

Treat all discursive thinking that goes by

As the traceless flight of a bird in the sky.

स्रान्यसर्हेगायानुगायुक्षसन्त्राष्ट्रस्तिन्। विकार स्रीत्यस्त्रस्तिन्। क्ष्यियानुगायुक्षस्त्रस्तिन्। क्ष्यियानुगायुक्षस्त्रस्य स्रान्धस्तिन्। स्रान्धस्तिन्

In short, threefold birth, cessation, and dwelling, ground, path, and fruition, view, meditation, and conduct, fruition, time, place, and words expressed, that to be placed and placer of it, that to be liberated and liberator of it, and so on are in self-illumination bias-less, without the grasped endeavours of abandoning and adopting, like streamlets merging with a great ocean, all phenomena are, in mind's expanse, alpha purity; Having developed assurance in this, cross over into being without grasping.

देख्न क्षें अके इस के नास पर्ये सण्टा क्षिय के स्वादे स्वाद्ध स्वाद्य

दे'धिश्वर्स्थार्हेग्'र्र्र्राय्यरार्मेथा'यर्र्य्या वित्राद्यस्था वित्राद्यस्था । देंर्खेद्रास्थरपत्रिक्षरपुद्रायहेगास्थर्यस्था ।

By doing so, it is certain that discursive thought will be liberated in its own place.

If you are a person of lesser ability, unable to stay in the state,

You should alternate analysis and resting as described earlier in the introductions.

Provoke discursive thoughts needed or otherwise till all sorts of thoughts are being produced, one after another, and keep it up until mind becomes tired of the process.

दे'त्रश्रभे'त्र्देन्'ळे'त्र'र्सेन्'त्र्यंन्'व्यंक्ष्य विष्टात्रः श्रीटान्त्र्यश्रम्भं श्रम् । दे'त्रश्रोधस्य दे'त्युत्र'देट'त्रबुट'त्रस्य वृद्धाः । दि'हेस'त्रहेत्रस्य देत्रस्य स्त्रास्य स्त्रीस्य ।

Then, when mind has become being tired of it, enter relaxation.

Alternatively, meditate on the genuine guru in the centre of your heart;

Keep your mind on him for a long time, then,

after that, set yourself in the state of grasping-less rigpa.

Alternatively, meditate on a sphere in the centre of your heart and imagine that it descends down until reaching the place of Great Indra; doing so will definitely sever agitation.

When the agitation has been cut, put yourself in the state of rigpa.

चुँद्रपाके तृष्ण भूद्रपाद्र प्रभुँद्रपा द्रिण पा हेत्रपासु द्राव्य स्व प्रभाव द्राय स्व प्रभाव द्राय स्व प्रमाय स्व स्व प्रमाय स्व प्य स्व प्रमाय स्व प्रमाय स्व प्रमाय स्व प्रमाय स्व प्रमाय स्व प्य

मुँद्रप्यस्थाके प्रहेत् सेद्रप्याण्यस्था । देनाया सुर्या मुश्राप्यस्था । केन्यस्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थान स्थाने स्थान स्थान

When the sinking has been cleared, put yourself into the grasping-less state.

These are my personal oral instructions, so understand them!

Not being bound by thoughts of wanting to be without thought,

Make your rigpa vast, let go into an infinite reach of elevated scope,

Then remain at ease and happy, open and unhindered.

प्रसंह का है मा मार्चे र से र कु प्र प्या | प्रस्तु कु से मू ह प्रयायम प्रा | प्रस्तु कु कि मा कि मा

षुत्रस्वत्रम्तिक्वेत्स्वयः के सुद्य्यदः। विक्रयः वर्ठवः देशः देशः में मिद्याद्येत् स्वरं में प्रित्र स्वरं भ्रीतः स्वरं प्रित्र स्वरं भ्रीतः स्वरं प्रित्र स्वरं भ्रीतः स्वरं प्रित्र स्वरं स्व

दें द्रमयाम्रहेशात्रयान्ते प्रतिः द्रमात् स्वात् स

Having been pleased, they show a loving appearance.

You visualize that they melt into light and that the whole of samsara and nirvana,

All of it, is totally filled with luminosity nectar.

Then the ones of good qualities who have become guests, the samaya dharma protectors, the excellent field of compassion- the six classes of sentient beings, and those with retribution to make ---all the dons, obstructors, and elementals, all of the migrators equal to the limits of space, are satisfied by this nectar which liberates on being tasted.

पार्वेर पद्यार्श माठेमा से स्वारं शुष्टा प्रस्त प्राप्त प्रस्त से स्वारं महिना से स्वारं स्वारं महिना से स्वारं स्वरं स्वारं स्

अर्ळन् नुसार रायचार ने सर अवावसाण्या । निस्तायसाय विष्य पित्री समा के माण्य स्वापा । क्षेत्र स्वाप्त के स्वापा अवावस्व स्वापा । क्षेत्र स्वापा अवावस्व स्वापा । क्षेत्र स्वापा स्वाप्त स्वापा स्वाप्त स्वापा स्वाप्त स्वाप्त

म्वरम्हिन्ग्रेन्युक्यस्य मेश र्श्वेक्यस्य प्राप्ति । स्वरम्भाविक्य महिक्य सेन्यस्य स्वर्था । स्वरम्भाविक्य महिक्य सेन्यस्य स्वर्था । स्वर्था स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स

# षाटायमाळासेन्यसेटामोयद्या विस्तरास्याचीयासायत्याः श्वेताद्वरायद्या । देयद्वेत्रस्यायर्चेत्रायदेगमेनास्यत्रमायहेत्राद्वा । प्तायमुक्तेः श्वेष्टेस्य प्रमुद्यस्य स्वायद्वेत्रायदेशा । षेत्रायलेत्रार्वेत्रायसाण्याः केसाञ्चमार्मी ॥

You will be like a lion who has no anxiety or concern.

Everything being primordially liberated, you will be the sky cleared of clouds.

That sort of yogin is a real sugata vidyadhara

worthy of the prostrations that come with being placed above the

crowns of hundreds of faithful beings,

superior in greatness to even a wish-fulfilling jewel.

हैं खें अर्डि। ८ प्यट्स्य प्यत्य प्यत्य प्यत्य प्यत्य प्रत्य प्य

. . . . .

#### **EMAHO**

Now, listen once more fortunate ones to this song of one who has abandoned activities!

Vairochana does not exist outside, he exists within. mindness free of elaboration, dharmadhatu wisdom, The very entity of delusion purified in its own place is the actual bhagavat Vairochana.

र्हेर बेशवायु दाये दो दिना क्याय कर माने साय मान से विद्याप हैं हो हो स्वाय कर माने साय मान से विद्याप हो । भे स्वाय प्रति हो स्वाय के स्वयाप कर हो । Vajrasatva does not exist outside, he exists within. Rigpa's liveliness unstopped basis of shining forth, mirror-likewisdom, the very entity of anger purified in its own place Is the actual bhagavat Vajrasatva. रैक'प्पचुट'स्वे'क'सेन'ने'क्ट'क'र्थेन्। ।त्तुट'र्नेर'न्यायाः श्रुव'सेन'याः सङ्ग्र'हेन्'ट्ट'।। ट'कुप्र'र्न्ट'स्वर'न्यायपे'र्टे'र्वे'हेन्। ।वर्ठेस'स्वर'र्देक'केक'प्पचुट'स्वर'न्टेस'प्रेक'र्वे।।

Ratnasambhava does not exist outside, he exists within. without adoption-rejection, stoppage-furtherance, equality wisdom, the entity of pride purified in its own place, is the actual bhagavat Ratnasambhava.

र्देन'त्यमा'क्षे'ज'शेन'ने'जन'ज्ञेन्द्रित्य शुंजुन'य'र्शेन'हेंम्'न्द्रिम् । पर्देन'कम्बर'न्द्रम्'यदे'र्दे'हेन्। ।पर्ठेश'स्व पर्देन'न्यम'शेन'य'न्देश'श्चेज'र्द्दे। । Amitabha does not exist outside, he exists within. Discriminating wisdom, subsidence into the bliss-empty expanse, the entity of desire purified in its own place, is the actual bhagavat Amitabha.

ર્નેન મુન શ્રેન એર રેન પ્રત્યો રિયાય થયા શુદ રહ્યાં શ્રે યા વાર્ય સ્વાર્ત વાર્ય સ્વાર્ત વાર્ય સ્વાર્ત વાર્ય સ્વાર્ત સ્વાર્ય સ્વાર્ત સ્વાર્ય સ્વાર્ત સ્વાર્ય સ્વાર્ત સ્વાર્ય સ્વાર્ત સ્વાર્ય સ

हैं खें अर्फ़्ति ५ व्यट क्षिय स्वरंबेयय श्री सुना हैना स्वी । ५ नाय विट ह्वें प्रया हैं हिये ह्या व्या हैं वा । दे सुन्द हें नाय कर क्षुट ह्वे ५ प्रयास कर माना स्वरंब है के स्वारंब है के स्वी ।

EMAHO

# EMAHO

Now, listen once more fortunate only mind sons, glad and thankful, to this vajra song!

When you have realized it that way, the whole of appearance and existence, all of it, is a mandala showing the meaning of the books of oral instruction.

ब्रूट्रप्तः नृगारः नृश्चरः ब्रूर्वेनाश्चर्तेना मुःया । स्टः चुट्राये मेशः सेना स्यते : श्रु्वा मुःयेश । मिले सेन्यों या यद्देव सेन्यों यो सेन्यों सेन्या । स्ट्रियः मेश्वरः सेन्या मेश्वरः सेन्या । सेन्या सेन्या मेश्वरः सेन्या । सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या । सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या सेन्या । सेन्या स

On papers of the various red and white appearances,
the pen of self-arising wisdom, rigpa, writes
groundless, primordially liberated, grasping-less letters.
having looked at these books in the state of non-dual appearance-emptiness,
all of the third-order thousand worlds are a spontaneous-existence mandala.

Their rain sprinkles the mandala with the water of things left to be themselves, their straight roads have the nature of the baselines laid out, their foot marks are the coloured sand drawing.

Your body is the apparent-empty body of the yidam deity, Your verbal expressions are the empty sounds of vajra recitation and Your thoughts grasping-less self-liberated are the deity's mind.

ष्यत्रायमायम्ब्रीद्राध्यस्य उत्राधुमाकुर्ति । प्रचयः त्राः प्रक्षसः छत् स्रेतः स्रेतः स्रेतः स्रेतः स्रेतः स्र म्ब्रुम् स्रोत्रः स्रम् स्राः स्रम् स्राः स्रम् स्रोतः स्र

Your limbs' movements all are prostrations, your food and drink are dharmata offerings.

Everything apparent in form is the deity's body.

All sounds and expressions you make are music.

This is the without keeping, without corruption, left-to-be-itself samaya.

देयद्वैः इवायदें स्यायेश के मुश्य गुरा विद्राग्य विश्व के कि द्वा ग्राप्त विश्व के कि द्वा प्राप्त के कि दिया क

Fortunate heart sons, the attainment of wondrous and marvelous siddhis quickly and without application of conceptual efforts is one of the special features of Great Completion!

If your practice turns into that kind of certainty,

Samsara-nirvana's masses of thoughts will have been purified in the primal ground like clouds having vanished in the state of the sky and self-knowing luminosity, the dharmakaya, will have been manifested.

Like the sun's disk which is luminous without obscuration.

Then you will be able to revive the dead and understand the secret, and will tame migrators by showing various miracles.

Having perfected all good qualities of the levels and paths without exception, those of you with the best of faculties will be liberated in this life, those with intermediate ones at the point of death, and those with inferior ones in the bardo.

Having been liberated in the alpha purity ground, you will be perpetually seated in the inner expanse without disconnection from the wisdom three kayas.

Then you will distribute the taming emanations and they will enact benefit for migrators uninterruptedly.

क्षेमार्नेक परिन्द सम्मानिक मिन्न प्राप्त क्षित प्राप्त के सम्मानिक प्राप्त के सम्मानिक प्राप्त के सम्मानिक प्राप्त के सम्मानिक सम्मानिक

This "Song of the View of the Thorough Cut of Luminosity Great Completion Called 'Flight of the Garuda Capable of Quickly Traversing All the Levels and Paths'" is based on many Great Completion treasures- "Introduction which Brings Naked Sight of RIgpa" by Orgyan Rinpoche, All Knowing's "Seven Treasuries" and "Three Chariots" and his support dharmas for Great Completion "The Space Trilogy" and "Billowing Clouds of An Ocean of Profound Meaning", his "Great Completion Dakini Quintessence", "Buddha in the Palm of the Hand", and so on- and ornamented with notes from my guru's foremost instructions and my own experience.

This vajra song was roused in order to benefit all the fortunate ones who seek emancipation, so the time to sing it is when yogins are preserving the view. The way to sing it is contained in the words of the eminent vidyadhara Saraha who said,

Buddhas' enlightened mind is pervasively present; Sentient beings' rigpa is partially present; Making it as vast as space is the great way to enhance it. According to that, making your rigpa vast as space, let go into an infinite reach of elevated scope, then bring this vajra song forth from the state of mindness wide open and pervasively spread, and that will enhance view and meditation.

\_\_\_\_\_